ये तैयारी के दिन थे

कार्डिनल मरफी, जो विंसमिंस्टर के आर्चविशप हैं, संत पापा के दूत के रूप में 4–5 फरवरी 2011 को रांची पधार रहे हैं। संत पापा जोन पॉल द्वितीय के भारत आगमन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर यह कार्यक्रम रखा गया है। ज्ञात होगा कि सन् 1986 में संत पापा जोन पॉल द्वितीय ने भारत के चौदह शहरों का दौरा किया था। रांची में कार्डिनल मरफी सेवा विमान से चार फरवरी को पधारेंगे। उनका स्वागत हवाई अड्डे पर किया जायेगा। स्कूली बच्चे विभिन्न स्थानों में उनके स्वागतार्थ संत पिता की झंडी के साथ उनकी आगवानी करेंगे। संत पापा के दूत सबसे पहले संत मरिया महागिरजाघर जायेंगे और फादर लीवंस की कब्र के पास प्रार्थना करेंगे। तत्पश्चात उन्हें आर्चविषप हाउस में लिया जायेगा। अपराहण चार बजे संत जेवियर्स कॉलेज के सभागार में उनके साथ सामाजिक विषयक आदिवासी मुद्दों में पर एक सभा की जायेगी जिसमें मसीहियों के अलावे अन्य धर्मावलंबियों को भी शरीक होने के लिये न्योता दिया जायेगा। उम्मीद की जाती है कि यह सभा दो घंटो तक चलेगी और इसी के बाद चायपान होगा और पहले दिन का कार्यक्रम यहीं समाप्त होगा।

दूसरे दिन शनिवार को लोयोला मैदान में दस बजे प्रातः मिस्सा बलिदान रखा गया है। इसमें भी बिझान के सभी विशपगण शामिल होंगे। एक अच्छी खासी भीड़ आने की उम्मीद की जा रही है। दूसरी बेला उसी दिन करीब दो बजे संत अलबर्टस कॉलेज में संत पिता के दूत सभी काथलिकों को संबोधित करेंगे। फिर उसी शाम को वे सेवा विमान से ही कोलकोता के लिये प्रस्थान करेंगे।

कार्यक्रम बहुत बड़ा नहीं है फिर भी इसे सफल बनाने के लिये बारीकियों को देखा जा रहा है। करीब दो महीनों से इसकी तैयारियां जारी हैं और समिति के सदस्यों को लगातार बैठना पड़ रहा है। इसी क्रम में आज सुबह जेवियर सेवा संस्थान में एक बैठक कुछ चुनेंदे लोगों के साथ रखी गयी थी। मुद्दा था पहले दिन का कार्यक्रम। फादर अलेक्स ने मिनट दर मिनट के कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर रखा था और उसमें शामिल प्रत्येक दल जैस नृत्य दल, सभागार में बैठाने के लिये वोलेंटियरर्स, फूलों का गुलदस्ता भेंट करने के लिये युवतियां, गणमान्य लोगों के बैठने के लिये स्थान और उस प्रकार की कुर्सियां, साउंड सिस्टम से लेकर वक्ताओं के बैठने और बोलने के लिये तैयारी आदि के लिये तैयारी करने की बातें इसमें शामिल थीं। यह बैठक हालांकि पहली नहीं थी, इसमें भी पूर दो घंटे लगे। और सभा के अंत में निर्णय हुआ कि चार दिनों के बाद फिर से वापस बैठने की जरूरत होगी जिससे काम के गति का मूल्यांकन किया जायेगा। किसी भी कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये कितनी मेहनत करनी पड़ती है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है। कभी– कभी कार्यक्रम एकदम सही ढंग से चलते हैं तो मालूम नहीं पड़ता है कि यह आखिर इतनी अच्छी तरीके से कैसे चल रहा है।

बैठक में फादर प्रोविंशियल, जेवियस समाज सेवा संस्थान के निदेशक, संत जेवियर्स कॉलेज और निर्मला कॉलेज के प्राचार्य के अलावे रेक्टर, लोरेटो की प्रींसिपल और सुपीरियर और उर्सुलाइन कान्वेन्ट के सुपीरियर गण मौजूद थे।